JINNAT KA BADSHAH (HINDI)

जिन्नात का बादशाह

और दीगर करामाते ग़ौसे आ'ज़म

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

येह रिसाला **(जिन्नात का बादशाह)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात,

फ़ोन : MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

﴾1﴿ जिन्नात का बादशाह

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (20 सफ़ह़ात) अव्वल ता आख़िर पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ आप का ईमान ताज़ा हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरदारे दो[2] जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : "जिस ने मुझ पर रोज़े **जुमुआ़** दो सो[200] बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के **दो सो[200] साल** के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।"

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث۲۲۳۵۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अबू सा'द अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद का बयान है : एक बार मेरी लड़की फ़ात़िमा घर की छत से यकायक ग़ाइब हो गई। मैं ने परेशान हो कर सरकारे बग़दाद हुज़ूर सय्यिदुना **ग़ौसे पाक** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर फ़रियाद की। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : कर्ख़ जा कर वहां के वीराने में रात के वक़्त एक टीले पर अपने इर्द गिर्द ह़िसार (या'नी दाएरा) बांध कर बैठ जाओ, वहां **बिस्मिल्लाह** कह लेना और मेरा तसव्वुर बांध लेना। रात के अंधेरे में तुम्हारे इर्द गिर्द **जिन्नात के लश्कर** गुज़रेंगे, उन की शक्लें अ़जीबो ग़रीब होंगी, उन्हें देख

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

कर डरना नहीं, स-ह़री के वक़्त **जिन्नात का बादशाह** तुम्हारे पास ह़ाज़िर होगा और तुम से तुम्हारी ह़ाजत दरयाफ़्त करेगा। उस से कहना **:** "मुझे शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی) ने बग़दाद से भेजा है, तुम मेरी लड़की को तलाश करो।"

चुनान्चे कर्ख़ के वीराने में जा कर मैं ने हु़ज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के बताए हुए त़रीके़ पर अ़मल किया, रात के सन्नाटे में **ख़ौफ़नाक जिन्नात** मेरे ह़िसार के बाहर गुज़रते रहे, जिन्नात की शक्लें इस क़दर हैबत नाक थीं कि मुझ से देखी न जाती थीं, स-ह़री के वक़्त **जिन्नात का बादशाह** घोड़े पर सुवार आया, उस के इर्द गिर्द भी जिन्नात का हुजूम था। ह़िसार के बाहर ही से उस ने मेरी ह़ाजत दरयाफ़्त की। मैं ने बताया कि मुझे हु़ज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने तुम्हारे पास भेजा है। इतना सुनना था कि एक दम वोह घोड़े से उतर आया और ज़मीन पर बैठ गया, दूसरे सारे जिन्न भी दाएरे के बाहर बैठ गए। मैं ने अपनी लड़की की गुम शु-दगी का वाक़िआ़ सुनाया। उस ने तमाम जिन्नात में ए'लान किया कि लड़की को कौन ले गया है ? चन्द ही लम्ह़ों में जिन्नात ने एक **चीनी जिन्न** को पकड़ कर बत़ौरे मुजरिम ह़ाज़िर कर दिया। **जिन्नात के बादशाह** ने उस से पूछा **:** कुत़्बे वक़्त ह़ज़रते ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के शहर से तुम ने लड़की क्यूं उठाई ? वोह कांपते हुए बोला **:** आ़लीजाह ! मैं देखते ही उस पर आ़शिक़ हो गया था। बादशाह ने उस **चीनी जिन्न** की गरदन उड़ाने का हुक्म सादिर किया और मेरी प्यारी बेटी मेरे सिपुर्द कर दी। मैं ने **जिन्नात के बादशाह** का

शुक्रिया अदा करते हुए कहा : مَاشَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! आप सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के बेहद चाहने वाले हैं ! इस पर वोह बोला : **बेशक जब हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم **हमारी तरफ़ नज़र फ़रमाते हैं तो जिन्नात थरथर कांपने लगते हैं । जब अल्लाह तबा-र-क व तआला किसी कुत्बे वक़्त का तअ़य्युन फ़रमाता है तो जिन्न व इन्स उस के ताबेअ़ कर दिये जाते हैं ।**

(بَهْجَةُ الْاَسرارللشّطنوفی ص۱٤۰ دارالکتب العلمیة بیروت، زبدة الآثار ص ۸۱)

थरथराते हैं सभी जिन्नात तेरे नाम से
है तेरा वोह दबदबा या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ ग़ौसे पाक का दीवाना

सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ के आबाई गाउं कुतियाना (गुजरात, अल हिन्द) का एक वाक़िआ़ किसी ने सुनाया था कि वहां एक **ग़ौसे पाक का दीवाना** रहा करता था जो कि **ग्यारहवीं शरीफ़** निहायत ही एहतिमाम से मनाता था । एक ख़ास बात उस में येह भी थी कि वोह **सय्यिदों** की बेहद ता'ज़ीम करता, नन्हे मुन्ने सय्यिद ज़ादों पर शफ़्क़त का येह हाल था कि उन्हें उठाए उठाए फिरता और उन्हें शीरीनी वग़ैरा ख़रीद कर पेश करता । उस दीवाने का इन्तिक़ाल हो गया । मय्यित पर चादर डाली हुई थी, सोग-वार जम्अ़ थे कि अचानक चादर हटा कर वोह **ग़ौसे पाक का दीवाना** उठ बैठा । लोग घबरा कर भाग खड़े हुए, उस ने पुकार कर कहा : डरो मत, सुनो तो सही ! लोग जब क़रीब आए तो कहने लगा : बात दर अस्ल येह

है कि अभी अभी **मेरे ग्यारहवीं वाले आक़ा,** पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, क़ुत़्बे रब्बानी, मह़बूबे सुब्ह़ानी, ग़ौसुस्स–मदानी, क़िन्दीले नूरानी, शहबाज़े ला मकानी, पीरे पीरां, मीरे मीरां, अश्शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی तशरीफ़ लाए थे, उन्हों ने मुझे ठोकर लगाई और फ़रमाया **: "हमारा मुरीद हो कर बिग़ैर तौबा किये मर गया उठ और तौबा कर ले ।"** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझ में रूह़ लौट आई है ताकि मैं तौबा कर लूं । इतना कहने के बा'द दीवाने ने अपने तमाम गुनाहों से तौबा की और कलिमए पाक का विर्द करने लगा, फिर अचानक उस का सर एक त़रफ़ ढलक गया और उस का इन्तिक़ाल हो गया ।

रज़ा का ख़ातिमा बिलख़ैर होगा अगर रह़मत तेरी शामिल है या ग़ौस

सरकारे बग़दाद हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दीवानों और मुरीदों को मुबारक हो कि सरकारे बग़दाद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं **: मेरा मुरीद चाहे कितना ही गुनहगार हो वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक तौबा न कर ले ।** (ऐज़न, स. 191)

मुझ को रुस्वा भी अगर कोई कहेगा तो यूंही
कि वोही ना वोह गदा बन्दए रुस्वा तेरा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ दिल मेरी मुट्ठी में हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बज़्ज़ार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, एक

बार **जुमुअ़तुल मुबारक** के रोज़ मैं **हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के साथ जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जा रहा था, मेरे दिल में ख़याल आया कि हैरत है जब भी मैं मुर्शिद के साथ **जुमुआ़** को मस्जिद की त़रफ़ आता हूं तो सलाम व मुसा-फ़ह़ा करने वालों की भीड़भाड़ के सबब गुज़रना मुश्किल हो जाता है, मगर आज कोई नज़र तक उठा कर नहीं देखता ! मेरे दिल में इस ख़याल का आना ही था कि **हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم मेरी त़रफ़ देख कर मुस्कराए और बस, फिर क्या था ! लोग लपक लपक कर मुसा-फ़ह़ा करने के लिये आने लगे, यहां तक कि मेरे और मुर्शिदे करीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّحِيْم के दरमियान एक हुजूम ह़ाइल हो गया। मेरे दिल में आया कि इस से तो वोही ह़ालत बेहतर थी। दिल में येह ख़याल आते ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : ऐ उ़मर ! तुम ही तो हुजूम के त़लबगार थे, **तुम जानते नहीं कि लोगों के दिल मेरी मुट्ठी में हैं अगर चाहूं तो अपनी त़रफ़ माइल कर लूं और चाहूं तो दूर कर दूं।** (بَهْجَةُ الْاَسرار ص١٤٩)

कुन्जियां दिल की ख़ुदा ने तुझे दीं ऐसी कर
कि येह सीना हो मह़ब्बत का ख़ज़ीना तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ अल मदद या ग़ौसे आ'ज़म

ह़ज़रते बिशर क़-रज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि मैं शकर से लदे हुए 14 ऊंटों समेत एक तिजारती क़ाफ़िले के साथ था। हम ने रात एक ख़ौफ़नाक जंगल में पड़ाव किया, शब के इब्तिदाई ह़िस्से में मेरे

चार[4] लदे हुए **ऊंट** ला पता हो गए जो तलाशे बिस्यार के बा वुजूद न मिले । क़ाफ़िला भी कूच कर गया, शुतुर बान (या'नी ऊंट हांकने वाला) मेरे साथ रुक गया । सुब्ह़ के वक़्त मुझे अचानक याद आया कि मेरे पीरो मुर्शिद **सरकारे बग़दाद** हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझ से फ़रमाया था **: "जब भी तू किसी मुसीबत में मुब्तला हो जाए तो मुझे पुकार** اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **वोह मुसीबत जाती रहेगी ।"** चुनान्चे मैं ने यूं फ़रियाद की **: "या शैख़ अ़ब्दल क़ादिर ! मेरे ऊंट गुम हो गए हैं ।"** यकायक जानिबे मशरिक़ टीले पर मुझे सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक बुज़ुर्ग नज़र आए जो इशारे से मुझे अपनी जानिब बुला रहे थे । मैं अपने शुतुर बान को ले कर जूं ही वहां पहुंचा कि वोह बुज़ुर्ग निगाहों से ओझल हो गए । हम इधर उधर हैरत से देख ही रहे थे कि अचानक वोह चारों गुमशुदा **ऊंट** टीले के नीचे बैठे हुए नज़र आए । फिर क्या था हम ने फ़ौरन उन्हें पकड़ लिया और अपने क़ाफ़िले से जा मिले । (بَهْجَةُ الْاَسرار ص١٩٦)

नमाज़े ग़ौसिय्या का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल ह़सन अ़ली ख़ब्बाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को जब गुमशुदा ऊंटों वाला वाक़िआ़ बताया गया तो उन्हों ने फ़रमाया कि मुझे ह़ज़रते शैख़ अबुल क़ासिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बताया कि मैं ने सय्यिदुना शैख़ मुह़्यूद्दीन **अ़ब्दुल क़ादिर** जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی को फ़रमाते सुना है **: जिस ने किसी मुसीबत में मुझ से फ़रियाद की वोह मुसीबत जाती रही, जिस ने किसी सख़्ती में मेरा नाम पुकारा वोह सख़्ती दूर**

हो गई, जो मेरे वसीले से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की बारगाह में अपनी ह़ाजत पेश करे वोह ह़ाजत पूरी होगी । जो शख़्स दो[2] रक्अ़त नफ़्ल पढ़े और हर रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ के बा'द** قُلْ هُوَ الله **शरीफ़ ग्यारह ग्यारह बार पढ़े, सलाम फैरने के बा'द सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **पर दुरूदो सलाम भेजे फिर बग़दाद शरीफ़ की त़रफ़ ग्यारह क़दम चल कर** (पाक व हिन्द से बग़दाद शरीफ़ की सम्त मग़रिब व शिमाल के तक़्रीबन बीचों बीच है) **मेरा नाम पुकारे और अपनी ह़ाजत बयान करे** اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **वोह ह़ाजत पूरी होगी ।**

(بَهْجَةُ الْاَسرار ص١٩٧، زبدة الآثار للشيخ عبد الحق الدهلوی ص ١٠٩ بکسلنگ کمپنی بمبئی)

आप जैसा पीर होते क्या ग़रज़ दर दर फिरूं
आप से सब कुछ मिला या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह के सिवा किसी और से मदद मांगना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है मज़्कूरा ह़िकायत के ज़िम्न में किसी के ज़ेह्न में येह **वस्वसा** आए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी से मदद मांगनी ही नहीं चाहिये क्यूं कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मदद करने पर क़ादिर है तो फिर ग़ौसे पाक या किसी और बुज़ुर्ग से मदद मांगें ही क्यूं ? **जवाबन** अ़र्ज़ है कि येह शैत़ान का ख़त़रनाक तरीन वार है और इस त़रह़ वोह न जाने कितने लोगों को गुमराह कर देता है । ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी ग़ैर से मदद मांगने से मन्अ़ ही नहीं

फ़रमाया, बल्कि कुरआने करीम में जगह ब जगह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दूसरों से मदद मांगने की इजाज़त मर्हमत फ़रमाई है, हर हर त़रह़ से क़ादिरे मुत़्लक़ होने के बा वुजूद बज़ाते खु़द अपने बन्दों से दीने ह़क़ की **मदद** के लिये तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई है। चुनान्चे पारह 26 **सूरए मुह़म्मद** की आयत नम्बर 7 में इर्शाद होता है :

اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ یَنْصُرْكُمْ

(پ۲٦، محمّد:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम दीने खु़दा (عَزَّوَجَلَّ) की मदद करोगे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुम्हारी मदद करेगा।

ह़ज़रते ई़सा ने दूसरों से मदद मांगी

ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा **रूहु़ल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने ह़वारिय्यों से मदद त़लब फ़रमाई, चुनान्चे पारह 28 **सू-रतुस्सफ़** की चौदहवीं आयते करीमा में इर्शादे बारी तआ़ला है :

قَالَ عِیْسَی ابْنُ مَرْیَمَ لِلْحَوَارِیّٖنَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ई़सा (عَلَیْهِ السَّلَام) बिन मरयम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ने ह़वारिय्यों से कहा था कौन हैं जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ हो कर मेरी मदद करें ? ह़वारी बोले हम दीने खु़दा (عَزَّوَجَلَّ) के मददगार हैं।

ह़ज़रते मूसा ने बन्दों का सहारा मांगा

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जब तब्लीग़ के लिये फ़िरऔ़न के पास जाने का हुक्म हुवा तो उन्हों ने बन्दे की मदद ह़ासिल करने के लिये बारगाहे खु़दा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की :

وَاجْعَلْ لِّیْ وَزِیْرًا مِّنْ اَهْلِیْ ﴿۲۹﴾ هٰرُوْنَ اَخِی ﴿۳۰﴾ اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِیْ ﴿۳۱﴾ (پ۱۶، طٰهٰ:۲۹-۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मेरे लिये मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे। वोह कौन, मेरा भाई हारून (عَلَيْهِ السَّلَام) इस से मेरी कमर मज़्बूत़ कर।

नेक बन्दे भी मददगार हैं

पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की चौथी आयते मुबा-रका में इर्शादे बारी عَزَّوَجَلَّ है :

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِیْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِیْرٌ ﴿۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उन का मददगार है और जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) और नेक ईमान वाले और इस के बा'द फ़िरिश्ते मदद पर हैं।

अन्सार के मा'ना मददगार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! क़ुरआने पाक बिल्कुल साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में ब बांगे दुहुल येह ए'लान कर रहा है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो मददगार है ही मगर बि इज़्ने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ साथ ही साथ **जिब्रीले अमीन** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मक़्बूल बन्दे** (अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) और फ़िरिश्ते भी मददगार हैं। अब तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ येह वस्वसा जड़ से कट जाएगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मदद कर ही नहीं सकता। मज़े की बात तो येह है कि जो मुसल्मान **मक्कए मुकर्रमा** से हिजरत कर के **मदीनए मुनव्वरह** पहुंचे वोह **मुहाजिर** कहलाए और उन

के मददगार **अन्सार** कहलाए और येह हर समझदार जानता है कि ''अन्सार'' के लु-ग़वी मा'ना ''मददगार'' हैं।

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

अहलुल्लाह ज़िन्दा हैं

अब शायद शैतान दिल में येह ''वस्वसा'' डाले कि ज़िन्दों से मदद मांगना तो दुरुस्त है मगर बा'दे वफ़ात मदद नहीं मांगनी चाहिये। आयते ज़ैल और इस के बा'द वाले मज़्मून पर ग़ौर फ़रमा लेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वस्वसे की जड़ भी कट जाएगी। चुनान्चे **पारह** 2 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत 154 में इर्शाद होता है :

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ یُّقْتَلُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْیَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो ख़ुदा (عَزَّ وَجَلَّ) की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वोह ज़िन्दा हैं हां तुम्हें ख़बर नहीं।

अम्बिया ह़यात हैं

जब शु-हदा की ज़िन्दगी का येह ह़ाल है तो अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जो कि शहीदों से मरतबा व शान में बिल इत्तिफ़ाक़ आ'ला और बरतर हैं इन के ह़यात (या'नी ज़िन्दा) होने में क्यूंकर शुबा किया जा सकता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **बैहक़ी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने ह़याते अम्बिया के बारे में एक रिसाला लिखा है और ''**दलाइलुन्नुबुव्वह**'' में फ़रमाते हैं कि अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام शु-हदा की त़रह़ अपने रब عَزَّ وَجَلَّ के पास ज़िन्दा हैं।

(اَلْحاوی لِلفتاوی لِلسُّیوطی ج۲ ص۲۶۳،دَلَائِلُ النُّبُوَّةِ لِلْبَیْهَقِی ج۲ ص ۳۸۸ دارالکتب العلمیة بیروت)

औलिया ह़यात हैं

ह़ज़रते शाह **वलिय्युल्लाह** मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "हम्अ़ात" के हम्अ़ा नम्बर 11 में ग्यारहवीं वाले ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की शाने अ़-ज़मत निशान बयान करते हुए तह़रीर करते हैं : **حضرتِ مُحیُ الدّین عبدُالقادِر جِیلانی** رحمۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ

اَنْدْ وَلِہٰذا گُفتَہ اَنْدْکِہ اِیْشاں دَرْ قَبْرِ خُوْدْ مِثْلِ اَحْیاء تَصَرُّف مِیْ کُنَنْد۔

तरजमा : वोह शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی हैं, लिहाज़ा कहते हैं कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी क़ब्र शरीफ़ में ज़िन्दों की त़रह़ तसर्रुफ़ करते हैं (या'नी ज़िन्दों ही की त़रह़ बा इख़्तियार हैं)

(هَمعات ص ٦١ اكاديمية الشاه ولیُّ الله الدهلوی بابُ الاسلام حيدر آباد)

बहर ह़ाल अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ह़यात (या'नी ज़िन्दा) होते हैं और हम मुर्दों से नहीं बल्कि ज़िन्दों से मदद मांगते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से उन्हें ह़ाजत रवा और मुश्किल कुशा मानते हैं। हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिग़ैर कोई नबी या वली एक ज़र्रा भी नहीं दे सकता न ही किसी की मदद कर सकता है।

इमामे आ'ज़म ने सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद मांगी

करोड़ों ह़-नफ़िय्यों के पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में मदद की दर-ख़्वास्त करते हुए "क़सीदए नो'मान" में अ़र्ज़ करते हैं :

يَا اَكْرَمَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَنْزَ الْوَرٰى جُدْلِيْ بِجُوْدِكَ وَاَرْضِنِيْ بِرِضَاكَ

اَنَا طَامِعٌ بِالْجُوْدِ مِنْكَ لَمْ يَكُنْ لِاَبِيْ حَنِيْفَةَ فِي الْاَنَامِ سِوَاكَ

या'नी ऐ जिन्न व इन्स से बेहतर और ने'मते इलाही عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ाने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो आप को इनायत फ़रमाया है उस में से मुझे भी अ़त़ा फ़रमाइये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को जो राज़ी किया है आप मुझे भी राज़ी फ़रमाइये। मैं आप की सख़ावत का उम्मीद वार हूं, आप के सिवा **अबू ह़नीफ़ा** का मख़्लूक़ में कोई नहीं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमाम बूसीरी ने मदद मांगी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम श-रफुद्दीन बूसीरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने शोह्‌रए आफ़ाक़ **"क़सीदए बुर्दा"** में सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मदद की दर-ख़्वास्त करते हुए अ़र्ज़ करते हैं :

يَا اَكْرَمَ الْخَلْقِ مَا لِيْ مَنْ اَلُوْذُ بِهٖ سِوَاكَ عِنْدَ حُلُوْلِ الْحَادِثِ الْعَمَمِ

ऐ तमाम मख़्लूक़ से बेहतर, मेरा आप के सिवा कोई नहीं जिस की मैं पनाह लूं मुसीबत के वक़्त (قصیدۂ بُردہ ص٣٦)

इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने दीवान "नालए इमदाद" में अ़र्ज़ गुज़ार हैं :

लगा तकिया गुनाहों का पड़ा दिन रात सोता हूं
मुझे अब ख़्वाबे ग़फ़्लत से जगा दो या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (کنزالعمال)

﴾5﴿ लोटा क़िब्ला रुख़ हो गया

एक बार जीलान शरीफ़ के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का एक वफ़्द हुज़ूर सय्यिदुना **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَكۡرَم की ख़िदमते सरापा अ-ज़मत में ह़ाज़िर हुवा, उन्हों ने आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के लोटे शरीफ़ को ग़ैरे क़िब्ला रुख़ पाया (तो उस की त़रफ़ आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की तवज्जोह दिलाई इस पर) आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने अपने ख़ादिम को जलाल भरी नज़र से देखा । वोह आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के जलाल की ताब न लाते हुए एक दम गिरा और तड़प तड़प कर जान दे दी । अब एक नज़र लोटे पर डाली तो वोह खुद ब खुद **क़िब्ला रुख़** हो गया । (بَهۡجَةُ الۡاَسرار ص١٠١)

ख़ुदारा ! मरहमे ख़ाके क़दम दे जिगर ज़ख़्मी है दिल घाइल है या ग़ौस

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيۡب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लोटा क़िब्ला रुख़ रखा कीजिये

सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के दीवानो ! यक़ीनन **मह़ब्बत** का आ'ला द-रजा येही है कि अपने मह़बूब की हर हर अदा को खुश दिली के साथ अपना लिया जाए । लिहाज़ा हो सके तो लोटे की टूंटी हमेशा **क़िब्ला रुख़** रखा कीजिये । हुज़ूर **मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान** ह़ज़रत मौलाना सरदार अह़मद साह़िब رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه लोटे के इ़लावा अपने ना'लैने मुबा-रकैन भी **क़िब्ला रुख़** ही रखा करते । اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه सगे मदीना عُفِیَ عَنۡهُ इन दोनों[2] औलियाए किराम رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِمَا की इत्तिबाअ़ में ह़त्तल इम्कान अपने लोटे और जूतियों का रुख़ क़िब्ला

ही की त़रफ़ रखता है। बल्कि ख़्वाहिश येही होती है कि हर चीज़ का रुख़ जानिबे क़िब्ला रहे।

क़िब्ला रू बैठने वाले की ह़िकायत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दूसरी चीज़ों के साथ साथ हमें अपना चेहरा भी मुम्किना सूरत में क़िब्ला रुख़ रखने की आ़दत बनानी चाहिये कि इस की ब-र-कतें बे शुमार हैं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं **: दो[2] त़-लबा** इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये परदेस गए, दोनों[2] हम सबक़ रहे, जब चन्द सालों के बा'द वत़न लौटे तो उन में एक **फ़क़ीह** (या'नी ज़बर दस्त आ़लिम व मुफ़्ती) बन चुके थे जब कि दूसरा इ़ल्म व कमाल से ख़ाली ही रहा था। उस शहर के उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام ने इस अम्र पर ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ किया, दोनों के ह़ुसूले इ़ल्म के त़रीक़ए कार, अन्दाज़े तकरार और उठने बैठने के अत़्वार वग़ैरा के बारे में तह़क़ीक़ की तो एक बात नुमायां त़ौर पर सामने आई कि जो **फ़क़ीह** बन कर पलटे थे उन का मा'मूल येह था कि **वोह सबक़ याद करते वक़्त क़िब्ला रू बैठा करते थे** जब कि दूसरा जो कि कोरे का कोरा पलटा था वोह क़िब्ले की त़रफ़ पीठ कर के बैठने का आ़दी था। चुनान्चे तमाम उ़-लमा व फ़ु-क़हा رَحِمَھُمُ اللہُ تَعَالٰی इस बात पर मुत्तफ़िक़ हुए कि **येह ख़ुश नसीब इस्तिक़्बाले क़िब्ला** (या'नी क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ करने) **के एहतिमाम की ब-र-कत से फ़क़ीह बने क्यूं कि बैठते वक़्त का'बतुल्लाह शरीफ़ की सम्त मुंह रखना सुन्नत है।** (تَعلِيمُ المُتعلّم ص٦٨)

''बैतुल्लाहिल करीम'' के 13 हुरूफ़ की निस्बत से क़िब्ला रुख़ बैठने के 13 म-दनी फूल

❁ **सरकारे** मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उ़मूमन **क़िब्ला रू** हो कर बैठते थे।[1]

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

(1) मजालिस में सब से मुकर्रम (या'नी इ़ज़्ज़त वाली) मजलिस (या'नी बैठक) वोह है जिस में **क़िब्ले की त़रफ़ मुंह** किया जाए।[2]

(2) हर शै के लिये शरफ़ (या'नी बुज़ुर्गी) है और मजलिस (या'नी बैठने) का शरफ़ येह है कि इस में **क़िब्ले को मुंह** किया जाए।[3]

(3) हर शै के लिये सरदारी है और मजालिस की सरदारी उस में **क़िब्ले को मुंह** करना है।[4]

❁ **मुबल्लिग़** और मुदर्रिस के लिये दौराने बयान व तदरीस सुन्नत येह है कि पीठ क़िब्ले की त़रफ़ रखें ताकि इन से इ़ल्म की बातें सुनने वालों का रुख़ जानिबे **क़िब्ला** हो सके चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ सख़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **क़िब्ले** को इस लिये पीठ फ़रमाया करते थे कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

مـــدينـــــه

۱: احياء العلوم ج۲ ص۴۴۹ دار صادر بيروت ۲: اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ٦ ص ١٦١ حديث ٨٣٦١ دارالكتب العلمية بيروت ۳: اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج ١٠ ص ٣٢٠ حديث ١٠٧٨١ داراحياء التراث العربى بيروت ۴: اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ ص ٢٠ حديث٢٣٥٤

जिन्हें इ़ल्म सिखा रहे हैं या वा'ज़ फ़रमा रहे हैं **उन का रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ रहे ।**[1]

❁ **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अक्सर क़िब्ले को मुंह कर के बैठते थे ।[2]

❁ **क़ुरआने** पाक नीज़ दर्से निज़ामी के मुदर्रिसीन को चाहिये कि पढ़ाते वक़्त ब निय्यते इत्तिबाए़ सुन्नत अपनी पीठ जानिबे क़िब्ला रखें ताकि मुम्किना सूरत में त़-लबा का रुख़ क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ रह सके और त़-लबा को क़िब्ला रुख़ बैठने की सुन्नत, ह़िक्मत और निय्यत भी बताएं और सवाब के ह़क़दार बनें । जब पढ़ा चुकें तो अब क़िब्ला रू बैठने की कोशिश फ़रमाएं ।

❁ **दीनी** त़-लबा उसी सूरत में क़िब्ला रू बैठें कि उस्ताज़ की त़रफ़ भी रुख़ रहे वरना इ़ल्म की बातें समझने में दुश्वारी हो सकती है ।

❁ **ख़त़ीब** के लिये ख़ुत़्बा देते वक़्त का'बे को पीठ करना सुन्नत है और मुस्तह़ब येह है कि सामिईन का रुख़ ख़त़ीब की त़रफ़ हो ।

❁ **बिल ख़ुसूस**, तिलावत, दीनी मुत़ा-लआ़, फ़तावा नवीसी, तस्नीफ़ व तालीफ़, दुआ़ व अज़्कार और दुरूदो सलाम वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर और बिल उ़मूम जब जब बैठें या खड़े हों और कोई रुकावट न हो तो अपना

---

[1] اَلْمَقَاصِدُ الْحَسَنَة ص٨٨ دارالكتاب العربى بيروت

[2] الادب المفرد ص ٢٩١ حديث١١٣٧ مدينة الاولياء ملتان

चेहरा **क़िब्ला रुख़** करने की आ़दत बना कर आख़िरत के लिये सवाब का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कीजिये । (क़िब्ला की दाईं या बाईं जानिब 45 डिग्री के ज़ाविये (या'नी एंगल) के अन्दर अन्दर हों तो क़िब्ला रुख़ ही शुमार होगा)

❁ **मुम्किन** हो तो मेज़ कुरसी वग़ैरा इस त़रह़ रखिये कि जब भी बैठें आप का मुंह **जानिबे क़िब्ला** रहे ।

❁ **अगर** इत्तिफ़ाक़ से का'बा रुख़ बैठ गए और ह़ुसूले सवाब की निय्यत न हो तो अज्र नहीं मिलेगा लिहाज़ा अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिएं म-सलन येह निय्यतें : ﴾1﴿ सवाबे आख़िरत ﴾2﴿ अदाए सुन्नत और ﴾3﴿ ता'ज़ीमे का'बा शरीफ़ की निय्यत से क़िब्ला रू बैठता हूं । दीनी कुतुब और इस्लामी अस्बाक़ पढ़ते वक़्त येह भी निय्यत शामिल की जा सकती है कि क़िब्ला रू बैठने की सुन्नत के ज़रीए इ़ल्मे दीन की ब-र-कत ह़ासिल करूंगा । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

❁ **पाक** व हिन्द नीज़ नेपाल, बंगाल और सीलंका वग़ैरा में जब का'बे की त़रफ़ मुंह किया जाए तो ज़िम्नन मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ भी रुख़ हो जाता है लिहाज़ा येह निय्यत भी बढ़ा दीजिये कि ता'ज़ीमन मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ रुख़ करता हूं ।

बैठने का ह़सीं क़रीना है — रुख़ उधर है जिधर मदीना है

दोनों[2] आ़लम का जो नगीना है — मेरे आक़ा का वोह मदीना है

रू बरू मेरे ख़ानए का'बा — और अफ़्कार में मदीना है

नुस्ख़ए बग़दादी

(اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ साल भर तक आफ़तों से हिफ़ाज़त)

रबीउ़ल ग़ौस की ग्यारहवीं शब (या'नी बड़ी रात) सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के ग्यारह नाम (अव्वल आख़िर ग्यारह बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर ग्यारह खजूरों पर दम कर के उसी रात खा लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सारा साल मुसीबतों से हिफ़ाज़त होगी। ग्यारह नाम येह हैं :

《1》 या शैख़ मुहूयुद्दीन 《2》 या सय्यिद मुहूयुद्दीन 《3》 या मौलाना मुहूयुद्दीन 《4》 या मख़्दूम मुहूयुद्दीन 《5》 या दरवेश मुहूयुद्दीन 《6》 या ख़्वाजा मुहूयुद्दीन 《7》 या सुल्तान मुहूयुद्दीन 《8》 या शाह मुहूयुद्दीन 《9》 या ग़ौस मुहूयुद्दीन 《10》 या क़ुत़्ब मुहूयुद्दीन 《11》 या सय्यिदस्सादात अ़ब्दल क़ादिर मुहूयुद्दीन।

नुस्ख़ए बग़दादी की म-दनी बहार

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : 11 रबीउ़ल ग़ौस सि. 1425 हि. (2003 ई.) की सालाना ग्यारहवीं शरीफ़ के मौक़अ़ पर मैं दा'वते इस्लामी की जानिब से कोरंगी बाबुल मदीना कराची में होने वाले इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में ह़ाज़िर था, इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में सुन्नतों भरे बयान के दौरान "**बग़दादी नुस्ख़ा**" बताया गया। बयान के

बा'द सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में बैअ़त करवाने का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा, इसी दौरान बैठे बैठे मुझे ऊंघ आ गई, सर की आंखें तो क्या बन्द हुईं दिल की आंखें खुल गईं ! क्या देखता हूं कि ग्यारहवीं वाले **गौ़से पाक** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जल्वा फ़रमा हैं और उन्हों ने चादर फैला रखी है, मैं ने बढ़ कर चादर थाम ली मुझे ऐसा लगा कि और भी बहुत सारे लोगों ने चादर थाम रखी है मगर कोई नज़र नहीं आ रहा था ! माईक से आने वाली आवाज़ के मुताबिक़ मैं ने बैअ़त के अल्फ़ाज़ दोहराए, जब बैअ़त का सिल्सिला ख़त्म हुवा तो मैं ने हिम्मत कर के बारगाहे गौ़सिय्यत मआब में अ़र्ज़ की : **या मुर्शिद !** मेरी ज़ौजा उम्मीद से हैं, दर्दे ज़िह की वजह से बहुत सख़्त तक्लीफ़ हो रही है, डॉक्टर ने ऑपरेशन का कहा है। करम फ़रमाइये ! इर्शाद हुवा : "अभी जो **नुस्ख़ए बग़दादी** बयान किया गया है उस के मुताबिक़ अ़मल करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे प्यारे पीर साहिब ! रात काफ़ी गुज़र चुकी है और इस नुस्ख़े पर तो रातों रात अ़मल करना है, फ़रमाया : "तुम्हारे लिये इजाज़त है कि आज दिन के वक़्त ग्यारहवीं तारीख़ ख़त्म होने से पहले पहले इस नुस्ख़े पर अ़मल कर लो। और सुनो ! اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **बिग़ैर ऑपरेशन के दो जुड़वां बच्चों की विलादत होगी।** एक का **ह़स्सान** और दूसरे का नाम

मुश्ताक़ रखना, दोनों की गरदनों पर मेरा क़दम होगा ।" मैं ने घर पहुंच कर दिन के वक़्त **नुस्ख़ए बग़दादी** के मुताबिक़ ग्यारह खजूरें खिला दीं । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ खजूरें खाते ही राहत नसीब हो गई फिर वक़्त आने पर बिग़ैर ऑपरेशन के बहुत आसानी के साथ विलादत हो गई और ख़ुदा की क़सम ! मेरे मुर्शिदे पाक ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر की दी हुई ग़ैब की ख़बर के मुताबिक़ दो जुड़वां बच्चे पैदा हुए । सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हस्बुल इर्शाद मैं ने एक का हस्सान और दूसरे का नाम मुश्ताक़ रखा ।

येह दिल येह जिगर है येह आंखें येह सर है　　जिधर चाहो रखखो क़दम ग़ौसे आ'ज़म

जीलानी नुस्ख़ा

(पेट की बीमारियों के लिये)

रबीउ़ल ग़ौस की ग्यारहवीं रात तीन[3] खजूरें ले कर एक बार **सू-रतुल फ़ातिहा**, एक मरतबा **सू-रतुल इख़्लास**, फिर ग्यारह बार يَاشَيْخ عَبْدَالْقَادِر جِيلَانِى شَيْئًا لِلّٰهِ اَلْمَدَد (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर एक खजूर पर दम कीजिये, इस के बा'द इसी त़रह दूसरी और तीसरी खजूर पर भी पढ़ पढ़ कर दम कर दीजिये, येह खजूरें रातों रात खाना ज़रूरी नहीं जो चाहे जब चाहे जिस दिन चाहे खा सकता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ पेट की हर त़रह़ की बीमारी (म–सलन पेट का दर्द, क़ब्ज़, गेस, पेचिश, कै़, पेट के अल्सर वग़ैरा) के लिये मुफ़ीद है।

आप जैसा पीर होते क्या ग़रज़ दर दर फिरूं आप से सब कुछ मिला या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस
4 रबीउ़ल ग़ौस 1427 हि.

फ़ेहरिस

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में ***मक-त-बतुल मदीना*** *के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।*